पुच्छिंस्सुणं
और
णमिपवज्जा

(अर्थ, भावार्थ एवं अनुप्रेक्षा सहित)

-: प्रकाशक :-
श्री अ.भा. साधुमार्गी शान्त क्रान्ति जैन श्रावक संघ
उदयपुर (राज.)

आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. का जीवन वृत्त

जन्म	: 17 अक्टूबर, 1958 आश्विन शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 2015 (बीकानेर)
जन्म नाम	: विजय कुमार सोनावत
माता–पिता	: श्रीमान् जतनमल जी सोनावत–श्रीमती भँवरी बाई सोनावत (बीकानेर) (मातु श्री पीहर पक्ष–बोथरा परिवार, बीकानेर)
लौकिक शिक्षा	: माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर (राज.)
भीष्म प्रतिज्ञा	: ब्रह्मचर्य व्रत धारण–22 नवम्बर 1971, ब्यावर (राज.) मात्र 12 वर्ष
वैराग्य काल	: 13 माह लगभग
दीक्षा आज्ञा पत्र	: जयपुर, 09 अक्टूबर 1972, आश्विन शुक्ला द्वितीया वि.सं. 2029
दीक्षा स्थल	: गंगाशहर–भीनासर, जवाहर विद्यापीठ प्रांगण
दीक्षा वर्ष	: 15 फरवरी 1973 माघ शुक्ला त्रयोदशी वि.सं. 2029, अपने माता–पिता व लघु बहना महासती श्री प्रभावती जी म.सा. के साथ दीक्षित। बाद में भाणजी महासती श्री युगप्रभा जी म.सा. दीक्षित हुई।
शैक्षणिक योग्यता	: साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की सारी परीक्षाएँ समुत्तीर्ण की, जैन सिद्धांत रत्नाकर परीक्षा सर्वोच्च अंकों से समुत्तीर्ण की।
भाषा ज्ञान	: हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, राजस्थानी।
गुरू सानिध्य	: 17 वर्षों तक अन्तेवासी शिष्य के रूप में सेवा, साधना व संघ विकास यात्रा में समर्पित रहे। गौरवशाली आचार्य नानेश के प्रमुख प्रिय शिष्यों में आप प्रथम शिष्य।
विचरण क्षेत्र	: राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, सौराष्ट्र, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, दादरानागर हवेली, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, पांडिचेरी, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, उड़ीसा आदि।
साहित्य	: चारित्र निर्माण अभियान के अन्तर्गत–किं चरित्रं, सुचरित्रम्, किं पुण्यम् आदि अनेक ग्रंथों का प्रणयन।
तरूणाचार्य घोषणा	: चतुर्विध संघ की अनुज्ञापूर्वक महास्थविर श्रमणश्रेष्ठ पूज्य श्री शान्तिमुनि जी म.सा. द्वारा।
तरूणाचार्य पदारोहण	: श्री हुक्मगच्छीय शान्त–क्रान्ति संघ के तरूणाचार्य पद पर प्रतिष्ठित 31 जनवरी 1999 के शुभ दिन चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर विजय स्तम्भ की छांव में फतहप्रकाश के प्रांगण में विशाल समारोहपूर्वक.
आचार्य पद प्रतिष्ठा	: 27 अक्टूबर 1999, अजमेर कार्तिक कृष्णा तृतीया, वि.सं. 2056
व्यक्तिगत विशेषताएँ	: युवा मनस्वी, कविवर, शरीर सम्पदा के धारक, सरलता–सहजता–समरसता की प्रतिमूर्ति, जनमानस को भक्तिरस में भाव–विभोर कर देनेवाले स्वर माधुर्य के धनी, तेजस्वी, प्रतिभाशाली, प्रभावीवक्ता, दृढसंयमी जीवन कल्याण के साथ जनकल्याण के अनेक आयामों के प्रणेता, पृथ्वी सम क्षमाशील संयत वर्ग की सेवा में सन्नद्ध, मन–वचन –काया के तीनों योगों की शुद्धता एवं शुभता के स्वामी, श्रमण संस्कृति के मंगलमय समन्वय हेतु समर्पित।

विश्वास जैन (श्रीश्रीमाल)

- पुस्तक - पुच्छिंस्सुणं और णमिपवज्जा

- अनुप्रेक्षा - साध्वी श्री युगप्रभा जी म.सा.

- संस्करण - प्रथम आवृति ई - 22.06.2021

- अर्थ सौजन्य
  श्री युगप्रभा जी म.सा. के 49वें जन्मदिन
  के उपलक्ष्य में गुरूभक्त परिवार की ओर से

- प्रकाशक
  श्री अ.भा.सा. शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ
  नवकार भवन, 279-एच, हिरणमगरी, सेक्टर-3,
  उदयपुर (राजस्थान) 313002
  फोन : 0294-2461588

- प्रतियाँ - 1500 मूल्य - 65 रू.

- मुद्रक :
  जैन प्रिंटर्स, रायपुर (छ.ग.)